नागर गीता

१९६५ '६६ म रचित

बच्चन की अन्य रचनाएँ

१ मरकत द्वीप का स्वर (ईट्स की कविताओं का अनुवाद) '६५
२ दो चट्टानें '६५
३ चौंसठ रूसी कविताएँ (अनुवाद) '६४
४ चार खेमे चौंसठ खूँटे '६२
५ नये पुराने झरोखे (निबंध-संग्रह) '६२
६ त्रिभंगिमा '६१
७ कवियों में सौम्य संत (काव्य समालोचना) '६०
८ ओथेलो (अनुवाद) '५९
९ बुद्ध और नाचघर '५८
१० जनगीता (अनुवाद) '५८
११ आरती और अंगारे '५८
१२ मैकबेथ (अनुवाद) '५८
१३ धार के इधर उधर '५७
१४ प्रणय-पत्रिका '५५
१५ मिलन यामिनी '५०
१६ खादी के फूल '४८
१७ सूत की माला '४८
१८ बंगाल का काल '४६
१९ हलाहल '४६
२० सतरंगिनी '४५
२१ आकुल अंतर '४३
२२ एकांत संगीत '३९
२३ निशा निमंत्रण '३८
२४ मधुकलश '३७
२५ मधुबाला '३६
२६ मधुशाला '३५
२७ खैयाम की मधुशाला (अनुवाद) '३५
२८ उमर खैयाम की रुबाइयाँ (अनुवाद) '५९
२९ तेरा हार (प्रारंभिक रचनाएँ में सम्मिलित) '३२
३० प्रारंभिक रचनाएँ—पहला भाग } कविताएँ '४३
३१ प्रारंभिक रचनाएँ—दूसरा भाग }
३२ प्रारंभिक रचनाएँ—तीसरा भाग—कहानियाँ '४६
३३ बच्चन के साथ क्षण भर (संकलन) '३४
३४ सोपान (संकलन) '५३
३५ अभिनव सोपान (संकलन) '६४
३६ आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि बच्चन (संकलन—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार द्वारा संपादित) '[illegible]
३७ आधुनिक कवि (७) बच्चन (संकलन) '६१
३८ नेहरू: राजनीतिक जीवन चरित (अनुवाद) '६१
३९ आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि सुमित्रानंदन पंत (संकलन—बच्चन द्वारा संपादित) '६०
४० डब्ल्यू॰ बी॰ ईट्स ऐंड ऑकल्टिज्म (अंग्रेजी शोध प्रबंध) '६५
४१ निरीक्षा ([illegible] —डा० [illegible] द्वारा संपादित) '६६
मधुशाला का [illegible] (५) और [illegible] (४८) अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके हैं।
रचनाओं का [illegible] दिया जा रहा है।

नागर गीता

रूपांतरकार
बच्चन

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

पहला संस्करण जून १९६६

३०४०

मूल्य छः रुपये
प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज़ कश्मीरी गेट दिल्ली-६
मुद्रक हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस क्वीन्स रोड दिल्ली-६

NAGAR GITA BACHCHAN TRANSLATION
6.00



मेरे मामा जी
स्वर्गीय श्री विंध्येश्वरी प्रसाद की
पुण्य स्मृति में
श्रद्धा-स्वरूप

पहला संस्करण जून १९६६

मूल्य छः रुपये
प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज़ कश्मीरी गेट दिल्ली-६
मुद्रक हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस क्वीन्स रोड दिल्ली-६

NAGAR GITA BACHCHAN TRANSLATION
6 00



मेरे मामा जी
स्वर्गीय श्री विंध्येश्वरी प्रसाद की
पुण्य स्मृति में
श्राद्ध-स्वरूप

सम्बोधन

अपने नाम से एक और कृति आज आपके हाथों में रखते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

यह एक तरह से गीता का अनुवाद है।

गीता भारत के जीवन से इतने अनिवार्य रूप से संबद्ध है कि उसे किसी भी अभिनव रूप में उपस्थित करने के लिए किसी क्षमा याचना की आवश्यकता नहीं। आदि शंकराचार्य से विनोबा भावे तक भारत की सर्वोच्च मनीषाओं ने उसका गुणानुवाद किया है। अनात अथवा अपनानों का उत्ताप के महागान में, सुनते सुनते अपना भी कोई सुर छेड़ देना एक ऐसी कमजोरी है जिसे समझा जा सकता है। इसी प्रवृत्ति के उदाहरण-स्वरूप इस अनुवाद को समझा जाए।

इसे देखकर इसके पूर्व किए गए गीता के मेरे एक अन्य अनुवाद की याद आपको आना स्वाभाविक है। उस अनुवाद को मैंने जनगीता कहा था, इस अनुवाद को मैंने नागर गीता कहा है। वह अवधी भाषा में किया गया था, यह खड़ी बोली में है। वह भाषा के समय सिद्ध छन्दों में था—दोहा, सोरठा, चौपाई आदि में; यह खड़ी बोली गद्य की एक प्रयोगात्मक लय में बद्ध है—प्रयोगात्मक होकर भी सहज, जिसे मैं हिन्दी की आधारभूत लय मानता हूँ, जैसे आयंबिक पेंटामीटर को अंग्रेज़ी पद्य-गद्य दोनों की मोटे तौर से आधारभूत लय। इसे सिद्ध करने के लिए तर्क प्रस्तुत करने का यह स्थान नहीं। किसी नाम विशेष के अभाव में आप चाहें तो गीता के सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए इसे नारायण नर अथवा कृष्ण धनंजय लय कह सकते हैं जिसका अनुसरण कर पूरी नागर गीता चलती है। जनगीता में मैंने अपने को गीता का प्रतिध्वनिकार कहा था, इसमें मैं अपने को रूपान्तरकार कह रहा हूँ। उसके आमुख को मैंने मंगलाचरण कहा था, इसको सम्बोधन कह रहा हूँ—सम्बोधन का अर्थ सम्बोधित करने तक सीमित नहीं।

यह सब अतर अनायास ही नहीं है। कुछ विशेष बातें मेरे अतमन म रही हैं जिन्होंने मुझसे ऐसा कराया है। उन्हे आप चाहें तो ध्येय की सना भी दे सकते हैं। जो मेरा ध्येय हो वह पूरा भी हो यह आवश्यक नही है। जो पूरा हो उतना ही मरा ध्येय ठीक था ऐसा मैं मानना चाहूगा। ध्येय के पूण अथवा अपूण होने मे अपना समय लगता है। वह समय मेरी जीवन सीमा के बाहर भी हो सकता है अदर भी। समय का स्थायी निणय प्राय मद होता है। तब अभी से उसकी परि कल्पना कर यदि मैं उसकी काक्षा करू या उसस विद्वेष तो मेरी मूढ़ता होगी। मरे वतमान और भविष्य के—यदि रहे तो—पाठको के लिए तथ्य और कल्पना—दोनो इस सबध म सहायक सिद्ध हो सकेंगी इसलिए यह काय उन्ही पर।

फिर भी एक मोटी बात की ओर सकेत करना मैं समझता हू अनुचित न होगा। जो मेरे दोनों अनुवादों को यथेष्ट सहानुभूति से पढेंगे उनको स्वय एसा आभास होगा।

गीता किसी जड पुस्तक का नाम नही है। कुछ लोग शायद उसे अमर पुस्तक कहना चाहे। सजीव अथवा सप्राण पुस्तक कहकर कुछ लोगों को सतोष हो सकता है। मेरे लिए और शायद बहुतो के लिए गीता पुस्तक है ही नही। वह जीवित जाग्रत व्यक्ति है जिसे अपना कोई सगी-साथी और उसका अपना भाव और विचार जगत है जैसे किसी व्यक्ति का हृदय और मस्तिष्क होता है। जन गीता म मैंने उसके हृदय के कुछ तारो को झकृत करने का दु साहस किया था नागर गीता मे मैंने उसके मस्तिष्क की कुछ शिराओ को स्पश करने का प्रयास किया है। सफलता असफलता की बात सोचने की गीता मनाही करती है। कम से कम इन कृतियो के सबध में तो ऐसा ही सोचू। स्वा त सुखाय अथवा स्वात स्तम शातये भी मैंने इन कृतियो को प्रस्तुत किया हो तो मैंने कुछ अनुचित नही किया। मुझ साधारण का स्व ऐसा नहीं हो सकता कि किसी भी पर से मेल न खाए। फिर भी आपके स्वागत उपेक्षा—दोनो के लिए म तयार हूँ यानी दोनो के प्रति उदासीन।

जन और नागर शब्दो के समाज पक्ष की ओर भी आपका ध्यान जाना स्वाभाविक है। ग्राम और नगरो म बटा यह महादेश क्या हृदय और बुद्धि मे ही बटा नही है? शायद मेरी अवचेतना ने सकारण ही जनगण और नागरिको के लिए दो विभिन्न माध्यमों से एक ही कृति प्रस्तुत की है। बुद्धि और हृदय का एसा विभाजन स्वस्थ और हितकर नही। स्वस्थ और हितकर तो यह होगा कि नाग रिकों क पास ग्रामीणो का थोडा हृदय आए ग्रामीणो के पास नागरिको की थोडी बुद्धि जाए। प्रतीक रूप से जन गीता नगरो म भी प्रतिध्वनित हो नागर गीता

के दर्शन ग्रामो म भी हो। हृदय और बुद्धि मे सतुलन रखना गीता के समत्व योग के अतगत ही आएगा।

भावो को उद्वलित और विचारो को उदबुद्ध करने के लिए ध्वनि और रूप ज्योति के माध्यम क्रमश अधिक उपयुक्त समझ गए है। दोनो को एक साथ देखने सुननेवाल को सो-ल्यूमिनेग (साउड ल्यूमिनेशन) की सी अनभूति हो सकती है। अधिकारी पाठको को ऐसी अनुभूति कराने म ये कृतियाँ कहाँ तक सक्षम हो सकेंगी यह कहना मेरे लिए कठिन है। सजन करक सजक का काम समाप्त हो जाता है कृतियाँ बाद को यथाशक्ति-सामथ्य अपना दायित्व सभालें। अनुवाद को सजन मैं पहली बार नही कह रहा हू।

नागर गीता के मुखरित होने मे प्रेरणा उ ही काष्ठमौनी स्वामी जी महा राज की रही है जिनकी प्रेरणा स जन गीता रूपाकित हुई थी।

जन गीता के तीसरे सस्करण को अतिम रूप स सशोधित और परिष्कृत कराने के लिए अक्टूबर ६४ मे जब उ होने मुझे अपने पास बुलाया तो उ होने सकेत किया कि जन गीता का अनुवाद खडी बोली गद्य म भी किया जाना चाहिए। यद्यपि यह काम वे मुझसे कराना नही चाहत थ फिर भी उनकी अनिच्छावत् किसी इच्छा की पूर्ति मे मैं निमित्त बन सकू तो मुझ सतोष होना है। मैंने सोचा यह काम मैं ही करूगा। बाद को मुझ ध्यान आया कि मैं अनुवाद का अनुवाद क्या करू सीधे गीता स ही खडी बोली म अनुवाद क्या न करू। बीच म मेरे कवि मन ने उसे लयबद्ध गद्य म प्रस्तुत करन का भार लिया। खडी बोली म गीता के अनेक अनुवाद हैं। विचार विश्लेषण को लयबद्ध रखकर गीता की वाणी को खडी बोली में भी एक विशेष गौरव गरिमा दी जा सकती है। कम से कम उसे देने का प्रयास किया जा सकता है। नागर गीता वही प्रयास ह।

२६ जनवरी १९६६ को बसत के दिन मैंन नागर गीता की पाडुलिपि स्वामी जी महाराज के चरणो में रखी। उसके कुछ अशो न उ ही क सानिध्य म अतिम रूप ग्रहण किया। उनकी प्रतिक्रिया से किसी को प्रभावित करन की बात मेरे मन म नही। मुझ इतना ही कहना है—प्रशासन की शब्दावली म—कि उनस क्लियरेंस प्राप्त कर ही यह आपक सामन रखी जा रही है।

कृतज्ञता ज्ञापन किसी भी कर्म-यज्ञ का शाति-पाठ है या होना चाहिए। गीता को समझन म मैं जिन ग्रथो की सहायता लेता रहा हू उनक नाम गिना कर स्वाध्याय की व्यापकता प्रदर्शित करना नही चाहता। बाबा तुलसीदास क एक दोह की याद आ गई है उससे अधिक उपयुक्त शब्दो म उनक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित नहीं की जा सकती।

सपादन

अति अपार जे सरितवर जों नृप सेतु कराहिं,
चढ़ि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहिं जाहिं।

पर गीता प्रथा स पूणतया समझने की वस्तु नहीं। उसके लिए तो किसी एसे सिद्ध के सपक की आवश्यकता है जो गीता स्वरूप हो। वह साधन से अधिक सौभाग्य से मिलता है— सो सब साधन तें नहिं होई। काष्ठमौनी स्वामी जी का दर्शन मेरा बड़ा सौभाग्य है। उनके सपर्क म आकर भी जन गीता और नागर गीता मे त्रुटियां रह जाएं तो यही समझना चाहिए कि फूल फर न बेंत जदपि सुधा बरिसहिं जलद। उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं नमन है। मैं उनको मन नमन करता हूं यह उन तक पहुंचता भी है। तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय काय मैं इस नागर गीता मन का शांति पाठ करता हूं।

काष्ठमौनी स्वामी जी महाराज से क्लियरेंस प्राप्त करने मे श्री चिम्मन लाल गोस्वामी और श्री शिवनाथ दुबे से मुझे जो सहायता प्राप्त हुई है उसके लिए उनके प्रति भी नतमस्तक हूं।

और अंत म स्वस्ति वाचन के रूप म—जैसे जन गीता स मैंने आपके लिए आनंद की वैसे नागर गीता से आपके लिए जागति की कामना करता हूं। इससे अपने जीवन पथ के लिए आपको कोई क्षीण ज्योति भी प्राप्त हुई तो उसमें मैं अपना ही जीवन पथ प्रकाशमान मानूंगा।

१३ विलिंगडन क्रिसेंट
नई दिल्ली–११ —बच्चन
अप्रल ६६

क्रम

नागर गीता

पहला अध्याय

सजय से धतराष्ट्र न कहा 1
धमक्षत्र म कुरक्षत्र म
समरेच्छा से हुए इकटठ
मेरे और पाडुपुत्रा ने
जा कुछ किया
बताओ, सजय ।

सजय बाल, 2
व्यूहबद्ध पाडव-सना को
राजा दुर्योधन न देखा,
फिर आचाय द्रोण के सम्मुख जाकर
उनस ऐसा बात,

'ह आचाय, 3
पाडुपुत्रा का
इस महती सना का दख

इस
जापक शिष्य
द्रुपद क पुत्र गुणी न
व्यूहबद्ध कर खडा किया है ।

४ इसम
समरागण म अर्जुन भीम सरीखे
महा धनुधर शूरवीर हैं—
सात्यकि ह
विराट है,
राजा द्रुपद ख्यात जा महारथी हैं।

५ धष्टकतु औ चकितान है,
वीयवान काशीपति
पुरुजित कुतिभाज हैं
और न्य ह जो नरपुगव

६ औ पराक्रमी युधामन्यु है
और उत्तमौजा वलशाली,
और वीर अभिमन्यु
पच सुत द्रुपद सुता के—
ये सारे ही महारथी है।

७ अपने दल म भी विशिष्ट जो उन्हे
द्विजोत्तम
आप जान लें
अपनी सेना के जा नायक है,
अव उनके नाम
आपका वतलाता हू।

८ आप स्वय ह
भीष्म कण ह
समरविजेता कृपाचाय है

अश्वत्थामा हैं,
विकर्ण है,
सोमदत्त-सुत—भूरिश्रवा—हैं।

विविध अस्त्र शस्त्रों से सज्जित ९
और बहुत से शूरवीर हैं—
युद्ध विशारद,
सब मेरे हित
प्राण हथेली पर रखे हैं।

भीष्म सुरक्षित १०
सबल हमारी सेना
दुर्जय सब प्रकार है
और भीम रक्षित
इनकी यह सारी सेना
सुगम जेय है।

आप लोग सब ११
अपने-अपने सभी मोर्चों पर
अविचल रह
भीष्म पितामह की ही रक्षा में
तत्पर हों।'

इसपर १२
कौरव-वृद्ध प्रतापी भीष्म पितामह ने
गर्जन कर सिंहनाद सम
उच्चस्वर से शंख बजाया,
दुर्योधन के अंतस्तल में हर्ष जगाया।

१३ एक साथ फिर
गख, भेरिया
ढाल, मदग नसिंह बज उठे,
शब्द तुमुल अबर म छाया।

१४ तब सफद घाडो के
उत्तम रथ म बठ
कृष्ण और अर्जुन न अपन
दिव्य रूप स्वर गख बजाए।

१५ हृषीकेश न पाचजन्य को,
गुडाकेश न देवदत्त को
और बकोदर, भीमकम न
पौंड नाम के महाशख को
किया निनादित

१६ कुती पुत्र युधिष्ठिर न
जो शख बजाया
उसका नाम अनतविजय है
नकुल और सहदेव सहोदर ने जो
वे सुघोप मणिपुष्पक
कहलाते है।

१७–१८ श्रेष्ठ धनुधर काशिराज न
शूर शिखडी महारथी ने,
धष्टद्युम्न राजा विराट ने
अपराजित सात्यकि ने,
औ नरपाल द्रुपद ने,

और द्रौपदी के पुत्रों ने
महाबाहु अभिमन्यु बली ने,
हे पृथिवीपति —सब लोगों ने
अपने अपने शंख बजाए।

उन शंखों के १९
तुमुल घोष ने
पृथ्वी नभ शब्दायमान कर
महाराज के पुत्रों के उर
दीर्ण कर दिए।

राजन २०–२१
इसके बाद
कपिध्वज पांडु पुत्र ने
महाराज के पुत्रों को देखा
जो रण में खड़े हुए थे
और शस्त्र-संचालन-वेला में
वे अपना धनुष उठाकर
हृषीकेश से ऐसा बोले

अच्युत,
मेरे रथ को
दोनों सेनाओं के बीच कीजिए।

देखूँ तो उनको २२
जो सम्मुख युद्ध कामना से आए हैं
कौन कौन हैं
जो इस रण में
मुझसे लड़ने के लायक हैं

२३ जो इस रण मे
बुद्धिहीन दुर्योधन के जय कामी बन
लडने आए है
अच्युत,
मैं सबका देखूगा।

२४–२५ गुडाकेश की विनती सुनकर
हृषीकेश न
उत्तम रथ को
लाकर दोना सेनाओ के बीच
भीष्म औ द्रोण और सब नरपतियो के
सम्मुख रोक दिया
फिर बोल
'पाथ, कौरवा का दल देखो
जो कि यहा समवेत हुआ है।

२६–२७ पथा पुत्र ने
दोनो सेनाओ म
अपा पितामहा को
ओर पितव्या आचार्यो को,
मामा भ्राताओ को, पुत्रा औ पौत्रो को
श्वसुर, सुहृद, मित्रो को दखा।

२७–२८ कुती सुत ने
समर-भूमि म
सभी बधुआ को जब देखा,
उर म अतिशय करुणा जागी,
औ' विपाद से भारी मन से ऐसा बोले,

कृष्ण २८-२९
यहा पर समरोन्मुख स्वजनो को पाकर
मेरा तन कंपित हो रोमांचित होता है,
अंग शिथिल होते हैं
मुख सूखा जाता है।

देह जली जाती, ३०
मन ऐसा भ्रमित हो रहा
खडा नही मैं रह सकता हू
गांडीव को मेरा हाथ संभाल न पाता।

हे केशव ३१
सब लक्षण भी विपरीत दीखते
रण मे स्वजनो का वध कर
कल्याण नही मैं देख रहा हू।

कृष्ण ३२
विजय मैं नही चाहता
औ न राज्य ही
और न सुख ही
हे गोविंद
राज्य भोगो से
जीवन से भी
क्या प्रयोजन और मुझको।

जिनके कारण ३३
राज्य, भोग औ सुख इच्छित हैं
वे ही रण मे

खडे हुए है—

३४ गुरजन, दादे,
ताऊ चाचे मामे,
बटे पाते,
और ससुर औ साले
औ सारे मेर सबधी ।

३५ मधुसूदन
त्रलोक्य राज्य के लिए—
भूमि किस गिनती म है—
इ ह मारना नही चाहता
यदि ये मुझको मार तो भी ।

३६ क्या प्रस नता होगी
इन धतराष्ट सुता का मार
जनादन ?
वध कर भी
इन आततायिया का
हमको पाप ही लगगा ।

३७ इससे ह माधव
स्वबधु धतराष्ट-सुता को
हमे मारना नही चाहिए ।
फिर स्वजनो को मार
सुखी हम कस होंगे ?

यद्यपि लोभापहृत चित्त य ३८
नही देखते
दोप कुलक्षय का,
पातक भी मित्र द्रोह का

ता भा ३९
कुल-क्षय दोप जाननेवाले जा हम
क्या इस पातक स
हटन की बात न सोचें ?

कुल-क्षय स ४०
कुल धम सनातन मिट जाते है
और धम के मिट जान स
कृष्ण
अधम समूचे कुल पर छा जाता है ।

जब अधम छा जाता है तब ४१
कुलस्त्रियाँ दूषित हा जाती,
औ' दूषित हो जान स व,
कृष्ण
वणसकर का जन्म दिया करती ह ।

और वणसकर ४२
कुल का, कुल घातक का भी
नरक लोक म पहुचा दत,
पिंड और जल-वचित
इनक पितर लाग ना
गिर जात ह

४३ कृष्ण,
वर्णसंकरकारी इन दोषों से
कुल घातक लोगों के
शाश्वत कुल जाति धर्म,
निश्चय, मिट जाते।

४४ और जनार्दन,
हमने ऐसा सुन रक्खा है
जिन लोगों का
जाति धर्म कुल धर्म उठ गया
उन्हें नरक से कभी नहीं छुटकारा मिलता।

४५ कृष्ण शोक है
महापाप यह करने को जो
हम उद्यत हैं—
राज्य और सुख पाने को जो
स्वजनों का वध करने को तयार हुए हैं।

४६ बिना शस्त्र औ बिना लड़े मैं
अगर समर में
शस्त्रपाणि धृतराष्ट्र सुतों से मारा जाता,
तो भी मेरे लिए क्षेमकर।'

४७ ऐसा कहकर
धनुष-बाण तज,
रण-स्यंदन के पृष्ठ भाग में
शोक विकल अर्जुन जा बैठे।

दूसरा अध्याय

करुणा विगलित, शोकाकुल 1
अर्जुन की आखों को
आँसू से भरी देखकर
महाराज
मधुसूदन बोले

अर्जुन, 2
इस विषमस्थल में तुम
क्या अज्ञानी बन बैठे हो ?—
यह न आर्यपथ
यह न कीर्तिकर
यह न स्वर्गप्रद।

पार्थ 3
क्लैब्य को मत अपनाओ,
तुम्हें नहीं यह शोभा देता
क्षुद्र हृदय की दुर्बलता को त्यागो
खड़े हो।

अर्जुन बोले, 4

'हे मधुसूदन,
समर भूमि मे
भीष्म द्रोण पर बाण चलाकर
किस प्रकार मैं युद्ध करूँगा।
ह अरिसूदन,
वे दोना ही पूजनीय हैं।

५ गुरजन महानुभावा की
हत्या से बचकर
मुये लाक मे
भिक्षा पर भी जीना हो तो
श्रेयस्कर है।
गुरुआ का वध करके भी मैं
रक्त से सने
जय-काम के
भोगा को ही तो भोगूगा।

६ क्या करना
है श्रेष्ठ हमारे लिए,
हम यह ज्ञात नही है
औ न यही
हम जीतेगे या वे जीतेंगे।
क्या विडबना !—
जिह मारकर
हम जीना भी नही चाहते,
आन उ ही धतराष्ट्र सुता को
हम रण सम्मुख देख रह है।

कायरता ७
मेरे स्वभाव म समा गई है
औ' स्वधम म सशय मुझको,
इसीलिए मैं पूछ रहा हू
जो निश्चय श्रयस्कर हो
वह मुझ बताए
शिष्य आपका हू शरणागत,
पथ दिखलाए।

भू पर ८
धन सपन्न, अकटक राज्य
स्वग म
अमरा पर स्वामित्व
प्राप्त कर लने पर भी
वह उपाय मैं नहा देखता
जिसस मरे
इद्रिय शोषक शोक दूर हो।

हृपावश स ९
गुडाकेश एसा कहकर क
राजन् उनस फिर यो बोले
नहा करूगा युद्ध।
और व मौन हो रह।

इसपर, भारत १०
हँसत-अस
हृपाकर न
दोनो सनाओ क बीच

दुखी अजु न से
वचन कहे ये—

११ 'शोक मनाना
उचित नही है जिनपर,
उनपर शोक मनाता है
प्रनावादी वनता है।
जो पडित है
मत मृत्यों पर शोक न करते।

१२ और
न तो एसा ही है
मैं किसी काल म न था
न था तू
या ये राजा लोग नही थे,
और न एसा ही है
हम सव इससे आगे नही रहेंगे।

१३ जसे दही
देह धार
कौमार युवा वद्धावस्था वा
अनुभव करता
वसे ही देहातर पाता।
इसके कारण
धीर नही मोहित होते है।

१४ कौन्तेय
सयोग

इद्रियो औ' विषया के,
शीत उष्ण सुख दु खद,
भगुर हैं, अनित्य है
इ हे सहन कर ।

हे पुरुषषभ, १५
सुख-दुख एक समझने वाला
धीर पुरुष जो
इनसे व्यथित नहीं होता है
वह अमतत्व प्राप्त करता है ।

सत का ही अस्तित्व, १६
असत अस्तित्व रहित है,
इन दोना का पूण रूप से
तत्त्वदर्शिया ने देखा है ।

अविनाशी १७
तू उस जान,
जिससे यह सारा विश्व व्याप्त है,
उन अव्यय का
नाश नही काई कर सकता ।

नाश रहित, १८
निस्सीम,
नित्य देही के सब तन
अतवत ही कहे गए हैं ।
समर न कर तू
अमर उन्हें कर नहा सकेगा ।

अजु न, फिर क्यों
समर न कर तू।

१६ इसे मानता है जो हंता,
और इसे जो हंता समझता
वे दोनों ही नहीं जानते
यह न कभी हत होता
और न हंता बनता।

२० यह न कभी जन्मता न मरता,
होकर फिर से होना
इसकी प्रकृति नहीं है
यह शाश्वत अज नित्य, पुरातन
तन हनन में
इसका हनन नहीं होता है।

२१ पथा-पुत्र
जो उसे
अजन्मा अव्यय नित्य तथा
अविनाशी जाना करता
कसे किसका हनन कराता
कैसे किसका हंता बनता?

२२ जीर्ण वसन
तजकर नर जैसे
नए वस्त्र धारण करता है
जीर्ण देह
तजकर वैसे ही